चिंतन के क्षण

आचार्य सत्यजित् आर्य

*

संपादक
डॉ. राधावल्लभ

प्रकाशक

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद, जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307
दूरभाष : (02770) 287418, 287518, चलभाष : 94094 15011, 94094 15017
Email : darshanoyg@gmail.com, Website : www.darshanyog.org

चिंतन के क्षण

सूक्तिकार : आचार्य सत्यजित् आर्य

सम्पादक : डॉ. राधावल्लभ

प्रकाशन : अप्रैल 2017 **(प्रथम संस्करण)**

प्रकाशक : **दर्शन योग महाविद्यालय**
आर्यवन, रोजड़, पत्रा-सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307
दूरभाष: (02770) 287418, 287518
चलभाष: 09409415011, 09409415017
Email: darshanyog@gmail.com,
Website : www.darshanyog.org
Youtube / Facecook / Skype : darshanyog

डिजाइनिंग : मोहित ठाकुर (राजा)

लागत मूल्य : 75/- रुपये

मुद्रक : यश प्रिंटर्स, नारोल, अहमदाबाद, गुजरात

परमात्मा

सदा सब **जानता** रहता है।

वह सभी के **कर्मों** को जानता है,

तदनुसार **न्याय** करता है।

सभी के **सुख-दुःख भोग** को जानता है,

तदनुसार उनके

कर्माशय को **घटा** देता है।

यह तो नहीं **माना** जा सकता
कि मृत्यु का क्षण, स्थान व प्रकार
ईश्वर द्वारा **निर्धारित** व **नियन्त्रित** है।
आत्महत्या, हत्या, दुर्घटना,
रोग आदि की स्थितियों में
मृत्यु का **कारण** निश्चय ही
ईश्वर को **नहीं** माना जा सकता।

मुक्ति में आत्मा
सभी **बन्धनों** से **रहित** होता है,
वहाँ प्रकृति-शरीर का
बंधन भी
नहीं रहता।

हमें **अन्यों** द्वारा
जाने-अनजाने **अन्यायपूर्वक** भी
सुख-दुःख प्राप्त होता है।
हम स्वयं भी **अन्याय-अधर्म** से
सुख-दुःख लेते व देते रहते हैं।

जब **अन्य** हमें सुख-दुःख देते हैं
तो इसमें जो **अन्याय** होता है,
उस कर्म का फल
सुख-दुःख देने वाले को तो
ईश्वर देता ही,
साथ ही **जो** सुख-दुःख पाता है,
उसके प्रति भी **न्याय** करता है।

जिसने कर्म किया है,
उसे ही उसका फल मिलता है।
अन्य के कर्म का फल
अन्य को कभी नहीं मिलता।
किन्तु कर्म का
परिणाम उसे भी **मिल** सकता है
जिसने उस कर्म को **नहीं** किया होता है।

परमात्मा

अपनी सामर्थ्य से

मुक्त-आत्माओं को **ज्ञान** कराता है।

आत्मा स्वयं अपनी सामर्थ्य से

मुक्ति में ज्ञान

प्राप्त **नहीं** कर सकता।

भावना परोपकार की हो,
परोपकार **कर** भी रहा हो,
किन्तु **झूठ-छल** के साथ
परोपकार कर रहा हो,
तो निश्चय ही यह
अनुचित व **अधर्म** है।

झूठ-छल-चोरी से
धनादि प्राप्त करने वाला
यदि परोपकार दिखने वाले कर्म करता भी है,
तो वह वस्तुतः परोपकार के लिए
परोपकार नहीं करता,
वह किसी अन्य **लौकिक स्वार्थ**
नाम-पूजा-यश आदि के लिए
परोपकार करता है।

अधर्मपूर्वक
अर्जित धन से
परोपकार करने की अपेक्षा
अधर्म न करते हुए
परोपकार **न** करना
अच्छा है।

बड़े-बड़े परोपकार को
करते हुए व्यक्ति के
छोटे-छोटे छल को देखकर
उसकी **अत्यन्त निंदा** करना,
उसे **पूरा गलत**
या पूरा असत्य कहना,
ठीक **नहीं** है।

ईश्वरकृत
सृष्टि के नियम
यथावत् हैं,
उन्हें कभी कोई नहीं
बदल सकता,
न बदल पाया है।

जो मनुष्य
वास्तविक/आन्तरिक प्रेम
(लगाव, आत्मीयता, निकटता)
व श्रद्धा (आदेश पालन) से
ईश्वर की उपासना करेंगे,
उन्हीं उपासकों को ईश्वर **मुक्ति** देगा।

मेहनत से
बचने के लिये
ध्यान-साधना-स्वाध्याय का
बहाना बनाना
अनुचित है।

दण्ड देने का

वास्तविक प्रयोजन

अपराधी को **दुःख/कष्ट** पहुँचाना

नहीं होता,

बल्कि उसका

सुधार करना होता है।

दण्ड का **प्रयोजन**

यदि बिना दण्ड दिये ही

पूरा हो जाता है,

तो ऐसे में दण्ड देना

व्यर्थ है।

हमें **क्षमा** करने का अवकाश
तब मिलता है,
जब **अपराधी** वास्तव में अपना
सुधार कर ले,
अन्दर से सुधार कर ले।

प्रत्येक दुःख देना **हिंसा** नहीं होता।
ईश्वर, न्यायाधीश, गुरु,
माता-पिता भी **दण्ड** देते हैं,
उससे **दुःख** भी होता है,
किन्तु इसे **हिंसा** नहीं कहा जाता।

जब दण्ड **न्यायपूर्वक** होता है,
तो वह दया है, **अहिंसा** है।
जब दण्ड **अन्यायपूर्वक** हो,
तब उससे होने वाले **दुःख** के कारण
उसे **हिंसा** कहा जाना उचित है।

यदि **अपराधी** को
दण्ड न दिया जाये
तो इससे उसकी भी **हानि** होगी
व अन्य सज्जनों को भी **दुःख** मिलता रहेगा,
अतः अपराधी को **दण्ड** न देना
अहिंसा न होकर वास्तव में **हिंसा** है।

ईश्वर

आनन्दस्वरूप है,

मुक्ति में जीव भी

उसके आनन्द को पाकर

आनन्दमय हो जाता है।

जीव व ब्रह्म का **अस्तित्व**

सदा **पृथक्** रहता है,

दोनों में गुण-धर्मों

की **भिन्नता** है,

वह भिन्नता **सदा** रहती है।

स्थान-देश की दृष्टि से
जीव सदा ब्रह्म में ही रहता है।
ब्रह्म के **सर्वव्यापक** होने से
जीव कभी भी ब्रह्म से
पृथक् स्थान पर नहीं जा सकता,
नहीं मिल सकता।

जो वस्तु जैसी है,
उसका उसी रूप में **ध्यान**
किया जाना उचित है।
यदि **साकार** जड़-वस्तु का ध्यान है,
तो वह भी वैसा ही होगा,
जैसी वह **वस्तु** है।

भावावेश से रहित,

किन्तु

उच्च श्रद्धा-प्रेम-समर्पण से युक्त

सन्ध्या में अधिक **एकाग्रता** व

गहराई अनुभव होगी,

उच्च **विवेक व वैराग्य-स्थिति**

प्राप्त होगी।

वेद-ज्ञान

अत्यन्त **गम्भीर** व **असीमित** है।
जितना अधिक **खोजेंगे**,
जितनी अधिक **योग्यता** होगी,
उतना ही अधिक **ज्ञान**
वेद से मिलता जायेगा।

जन-सामान्य वेद के
व्याख्यानों को पढ़कर
वेद का **अर्थ** जान सकते हैं।
जिन्हें वेद का **गम्भीर ज्ञान** प्राप्त करना है,
वेद का **विद्वान्** बनना है,
उन्हें **व्याकरण** भी पढ़ना चाहिए।

कौन आत्मा
कितने वर्षों तक
कितनी मनुष्येतर योनियों में
कितनी **बार** जन्म लेगा,
यह उसके **पाप-कर्मों** की
पुण्य से अधिकता पर **निर्भर** करता है।

योगी आत्माएँ
जब **परोपकार** करती हैं,
तो उसमें उन्हें **लौकिक-फल** की
इच्छा नहीं रहती।
वे चाहे प्राणी-मात्र के लिए कार्य करें
या पड़ौसी के लिए।

मोक्ष प्राप्ति के लिए
जहाँ **भावना** की शुद्धता
(छल-कपट रहितता) आवश्यक है,
वहाँ **ज्ञान** की शुद्धता भी आवश्यक है।
भावना की पूर्ण शुद्धता
(निःस्वार्थता, निष्कामता) के लिए भी
ज्ञान की **शुद्धता** आवश्यक है।

आज जो सुख-दुःख
हम **भोग** रहे हैं,
वह मात्र **पूर्वकृत** कर्मों के
कारण ही नहीं होता,
वह हमारे **वर्तमान** के
कर्मों के कारण भी होता है।

हमारे कर्मों का **प्रभाव**
हमारे शरीर-मन-बुद्धि
सभी पर **पड़ता** है।
हमारी आन्तरिक
सुख-शान्ति भी
इस पर **निर्भर** करती है।

वर्तमान के जिन कर्मों का **फल**
हमें समाज द्वारा **अभी** नहीं मिलता,
उनका फल **ईश्वरीय व्यवस्था** से
इस जन्म में भी मिल सकता है
व **अगले** किसी जन्म में भी
मिल सकता है।

इस जन्म में किये कर्मों का पूरा **फल**
इसी धरती पर इसी जन्म में **मिल** जाये,
यह तो संभव नहीं है।
कुछ कर्मों का फल
इसी जन्म में इसी धरती पर मिल सकता है।
कुछ का **अगले** जन्मों में इस या अन्य धरती पर
धीरे-धीरे मिलता रहता है।

स्वर्ग-नरक

कोई **स्थान विशेष** नहीं है,

इस या अन्य धरती पर ही

सुख-विशेष व दुःख-विशेष का पाना

स्वर्ग-नरक है।

यदि दुर्घटना आदि ये सब **संयोग पूर्वकृत कर्मों** के अनुसार माने जायें तो '**कर्म करने की स्वतन्त्रता**' का अति महत्त्वपूर्ण व अत्यावश्यक सिद्धान्त **खण्डित** होता है।

कर्म की **स्वतन्त्रता** के
न मानने पर तो
पूरी कर्म-फल व्यवस्था,
पूरा पाप-पुण्य,
पूरी न्याय व्यवस्था, जन्म-मरण
सब **निराधार** व **व्यर्थ** हो जायेंगे।

श्राद्ध-तर्पण आदि द्वारा
मृत (शरीर छोड़ चुकी)
आत्माओं में से
किसी को किसी भी प्रकार
सुख नहीं पहुँचाया जा सकता है।

एक ईश्वर ही सारे ब्रह्माण्ड का
संचालक है, स्वामी है।
उसकी सामर्थ्य भी **अनन्त** है,
वह **सर्वव्यापक** है,
अतः वह कर्मानुसार किसी भी आत्मा को
कहीं भी यथायोग्य **जन्म** देने का
अधिकार व सामर्थ्य **दोनों** रखता है।

बिना **धन** के धर्म का **आचरण**
नहीं हो पाता है,
धन रहित व्यक्ति
पेट व परिवार की **चिंता** में ही लगा रहेगा,
उसकी धर्म के विचार व आचरण में
प्रवृत्ति होना बड़ा **कठिन** है।

नास्तिक व्यक्ति भी
यदि **मेहनत** करता है
तो उसे **फल** मिलेगा ही,
उसकी **उन्नति** होगी ही।

मेहनत करना

ईश्वर की **आज्ञा** का पालन करना है।

आज घर आदि की

सुविधाओं का **अधिक** होना

मनुष्य की मेहनत का **परिणाम** है।

नास्तिक व्यक्ति
यदि **आचरण-व्यवहार** अच्छा रखता है
व **मेहनत** करता है,
तो वह ऐसे आस्तिक से **अच्छा** है
जो ईश्वर के अस्तित्व को तो **मानता** है
किन्तु **आचरण-व्यवहार** अच्छा नहीं रखता,
मेहनत नहीं करता।

जो **अधर्म** से भौतिक उन्नति करेगा
और **ईश्वर** को नहीं मानेगा,
उसका जीवन **शान्त व सुखी** नहीं रह सकता।
विपरीत परिस्थितियों, विश्वासघात,
अन्याय आदि के समय भी
अपने को संतुलित रख पाने की **सामर्थ्य**
ईश्वर को **स्वीकारने** से आती है।

ईश्वर को
मानने का **फल**
भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में
नहीं देखना चाहिए।
भौतिक आवश्यकताओं की
पूर्ति के उपाय **भिन्न** हैं।

धर्म-ईश्वर पर
आस्था भी शुद्ध होनी चाहिए,
ज्ञानपूर्वक होनी चाहिए,
वह **अंध-श्रद्धा** नहीं होनी चाहिए,
तभी **अनुकूल परिणाम** आते हैं।

धर्म पर चलने वाला
अधिक शान्त-सुखी-स्वस्थ रहता है,
यह **प्रत्यक्ष** भी है
व **विज्ञान** से भी सिद्ध है।

सामाजिक दुष्प्रभाव व
हानि करने वाले
अपराधी को क्षमा करने से
अन्यों की **हानि** होती है,
अधर्म फैलता है।
अतः ईश्वर उन्हें **क्षमा** नहीं करता।

सामाजिक-राष्ट्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत
तो **अपराधी** को
दण्ड दिया ही जाना चाहिए,
उन्हें **दण्ड** न मिलने पर जनसामान्य
अपराध की ओर अधिक **प्रवृत्त** हो जायेगा,
जो कि **अनुचित** है।

व्यक्ति अपने प्रति
किये गये **अपराध** को
क्षमा कर सकता है,
पर यदि अपराध **सामाजिक** रूप में हो,
तो इसे **क्षमा** नहीं
किया जाना चाहिए।

स्त्री भी एक **मनुष्य** है,
एक **स्वतन्त्र आत्मा** उसमें भी है,
उसका भी
पुरुष के **समान अधिकार** है,
वह भी समाज का **अङ्ग** है।

जिस प्रकार मनुष्य-पशु-पक्षी आदि के
शरीर भोक्ता-जीवात्मा के
भोगायतन=भोग के **आधार** हैं,
वैसे ही वृक्षादि भोगायतन हैं,
इनमें भी एक **स्वाभिमानी जीव** रहता है,
जिसका वह वृक्षादि भोगायतन
शरीर होता है।

सुख-शांति से जीने के लिये
शारीरिक व **मानसिक** दोनों प्रकार के
कर्म **आवश्यक** हैं।
यदि कोई प्राणी कर्म न करना चाहे
तो भी बिना कर्म के रह नहीं सकता।

कर्म करने में चूंकि **कष्ट** होता है,
अतः हम कर्म से **बचते** हुए
दुःख की **निवृत्ति** व सुख की
प्राप्ति चाहने लगते हैं।
तब हम अल्प श्रम वाले
अधर्म का मार्ग पकड़ लेते हैं।
इससे हम अधिक **दुःखी** हो जाते हैं,
अस्वस्थ हो जाते हैं।

जिस प्रकार **थका शरीर**
अपना संतुलन व कार्यक्षमता **खोता** जाता है,
उसी प्रकार विचारों के प्रवाह से **थका** मन भी
अपना संतुलन व कार्यक्षमता **खोता** जाता है।
परिणाम यह होता है कि हम छोटे-छोटे कारणों से
उद्वेलित-आवेशित-अनियंत्रित हो जाते हैं।
इससे **स्वयं** भी दुःखी होते हैं
व **अन्यों** को भी दुःखी करके अपने लिये पाप कमा कर
भविष्य में अपने घोर दुःख पाने की **व्यवस्था** कर लेते हैं।

जिस प्रकार
अत्यधिक **शारीरिक** कर्म करने पर
ली गई **निद्रा**
पूरी थकान को हटा नहीं पाती है,
उसी प्रकार अत्यधिक व अनियन्त्रित
विचार से उत्पन्न **मानसिक** थकान को
निद्रा **पूरी** तरह हटा नहीं पाती है।

योग-समाधि-ध्यान के द्वारा विचारों को **नियंत्रित** करना, हमारे सुन्दर-सुखी-शांत जीवन के लिये **आवश्यक** है।

एक ओर जहां इससे निद्रा के समान **विश्राम-बल** मिलता है,

वहीं दूसरी ओर मन के नियन्त्रित होने से विचारों पर **नियन्त्रण** बना रहता है,

फलतः **मानसिक थकान** अधिक नहीं होती।

मन **उद्वेलित-आवेशित-अनियन्त्रित** नहीं होता।

पुरुषार्थ की न्यूनाधिकता का
मुख्य कारण हमारी **इच्छा** की
न्यूनाधिकता का होना है।
किसी विषय में इच्छा की न्यूनाधिकता का होना,
उस विषय से होने वाले
हानि-लाभ सम्बन्धी
हमारे **ज्ञान** पर निर्भर करता है।

कुछ ऐश्वर्य **सर्वोच्चता** पर
निर्भर करते हैं-
सबसे बड़ा ज्ञानी, धनी, बली आदि।
इसे तो **सब** प्राप्त ही नहीं कर सकते।
ऐसी सर्वोच्चता को तो
एक समय में **एक** ही
व्यक्ति **प्राप्त** कर सकता है।

प्रभु-कृपा से हम सब मनुष्यों में यह **सामर्थ्य** है
कि उन ऐश्वर्यों को न केवल **पा** सकते हैं,
बल्कि उन ऐश्वर्यों के **चरम** तक भी पहुँच सकते हैं।
वह ऐश्वर्य है **आध्यात्मिक शांति-संतोष** का,
वह ऐश्वर्य है **ईश्वर की निकटता** का,
वह ऐश्वर्य है **निर्भयता** का,
वह ऐश्वर्य है **शोकरहितता** का,
वह ऐश्वर्य है **ईश्वर के आनन्द** का।
ये सब **आन्तरिक ऐश्वर्य** हैं।

बाह्य ऐश्वर्य तो **सीमित** होने से
सबको इच्छानुसार **पूरे-पूरे** नहीं मिल सकते।
हम सब एक साथ
चक्रवर्ती सम्राट नहीं बन सकते,
वह तो एक समय में **एक** ही
व्यक्ति बन सकता है।
आन्तरिक ऐश्वर्य के सम्राट
हम सब **एक साथ** बन सकते हैं।

हम आन्तरिक-साधना, मन की शुद्धि,
मन की एकाग्रता, विवेक, वैराग्य आदि को
प्राप्त करने का पुरुषार्थ **आरंभ** कर दें या
जितना पुरुषार्थ कर रहे हैं, उसे और **बढ़ा** दें,
तो हमारे पुरुषार्थ के साथ ईश्वर की कृपा भी
जुड़ जायेगी व दोनों के मिलने से **तदनुरूप**
हमारे में आन्तरिक ऐश्वर्य की
वृद्धि होने लग जायेगी।

ऐश्वर्य की कामना **प्रगति** के लिए आवश्यक है,
प्रगति चाहे **भौतिक** हो या आध्यात्मिक।
भौतिक ऐश्वर्य प्राप्त करके,
उसका अनुभव लेकर व्यक्ति
उससे जब **वितृष्ण** हो जाता है,
भौतिक ऐश्वर्य की चाह
ललक से ऊपर उठ जाता है,
तो इसे ही '**वैराग्य**' कहते हैं।

जिस भौतिक बाह्य ऐश्वर्य को **चाहा** था
व पुरुषार्थ करके **पा** भी लिया था,
उससे **पूर्ण तृप्ति** को पाना
असंभव **ज्ञात** होने पर
व्यक्ति **आध्यात्मिक-आन्तरिक ऐश्वर्य**
को **पाना** चाहता है।

यदि व्यक्ति
अपने मन की ऐश्वर्य-प्रियता का
समझदारी से **उपयोग** करे,
तो **ईश्वर-साक्षात्कार** तक पहुँच सकता,
अपने जीवन को **चरितार्थ** कर सकता है,
कृतकृत्य हो सकता है।

अपने **मन** को
परमात्मा के ऐश्वर्य की ओर **मोड़** देने पर
सभी **आध्यात्मिक** उपलब्धियां
सहज मिलती जाती हैं।
प्रभु-कृपा से प्राप्त ऐश्वर्य-प्रिय मन का
यही **सर्वोत्कृष्ट उपयोग** है।

बाहर की अशान्ति के कारण
हमारे **अन्दर** की अशान्ति **उत्पन्न** होती है
और बाहर की अशान्ति के
न्यून या समाप्त होने के कारण
अन्दर की अशान्ति भी
न्यून या समाप्त हो जाती है।

हम अपनी असमर्थता,
अकुशलता, अल्पज्ञता,
आलस्य, उपेक्षा आदि के **कारण** भी
अशान्त-दुःखी
होते रहते हैं।

बाह्य-अशान्ति को हम
पूरी तरह समाप्त कर भी नहीं सकते।
बाह्य-अशान्ति का **कारण**
अन्य अनेक व्यक्ति भी होते हैं, जिन पर हम **पूर्ण**
नियन्त्रण-नियमन नहीं कर सकते।
किन्तु **आन्तरिक-अशान्ति** को हम
पूरी तरह समाप्त कर सकते हैं,
क्योंकि इसका मुख्य कारण हम **स्वयं** हैं।

यह हमारी **अज्ञानता** है कि
हम मन के
स्थिर-एकाग्र हो सकने के **सामर्थ्य** का
उचित व पर्याप्त **उपयोग**
नहीं कर पाते हैं।

हमें प्रतिदिन **पिछली** मलिनता को भी
कुछ न कुछ **कम** करना है।
नई मलिनतायें जो पूर्व संस्कारवशात्,
परिस्थितिवशात्, असावधानी से या जागरूकता की
कमी से **बन** जाती हैं, उन्हें भी **हटाना** है।
नई मलिनता न आने पाये,
इसकी भी पूरी **सावधानी** रखनी है।

प्रत्येक के पास **इतना**

सामर्थ्य व साधन (अन्तःकरण) उपलब्ध हैं।

विषयाकर्षण के समय यदि मनुष्य **बह** भी जावे,

किन्तु थोड़ी सी **जागरुकता** साथ में रख ले,

तो बार-बार विषय-प्रवाह में **बहने-फिसलने** पर भी

वह एक समय आने पर

इनसे **विरत** होने लगता है।

परमपिता परमात्मा की
हम पुत्रों-आत्माओं से **अपेक्षा** है
कि हम संपूर्ण **दुःखों** से
दूर होकर ईश्वरीय
नित्य-आनन्द को **प्राप्त** करें।

थोड़ी बहुत की जाने वाली
शुद्धि की क्या **सार्थकता**
रह जाती है,
जब हम उससे **बहुत अधिक**
अशुद्धि **बटोरते** जा रहे हैं।

प्रभु से
हमें जो भी **मिला** है,
वह हमारे **कर्मानुसार** मिला है।
प्रभु से
हमें जो **नहीं** मिला है,
वह भी हमारे **कर्मानुसार** है।

जब हम **प्रार्थना** करते हैं,
तब वह भी हमारे **कर्मानुसार** ही पूर्ण होती है।
प्रार्थना के **सफल** होने का अर्थ है कि
हमारे वैसे **कर्म** हैं।
प्रार्थना के **असफल** होने का अर्थ है कि
हमारे वैसे कर्म **नहीं** हैं।

वह कितना **आनन्द का जीवन** होगा,
जब हमारी प्रार्थना **शीघ्र** पूर्ण होगी,
जब हमें **बार-बार** प्रार्थना नहीं करनी पड़ेगी,
जब हमें **प्रार्थना** के बाद
उसके **पूर्ण** होने के लिये
लम्बे समय तक **प्रतीक्षा** नहीं करनी होगी।

प्रभु कृपालु हैं, प्रार्थना को सुनते हैं,
उन्हें **पूरा** भी करते हैं,
बस हमें अपना **कर्त्तव्य** पूरा करना है,
शुभकर्मों का **संचय** करना है,
अशुभ कर्मों से पूर्णतः **हट** जाना है।

अल्पज्ञ अल्पशक्तिमान् **आत्मा**
चाहे जितनी **बड़ी त्रुटि** कर दे,
चाहे जितना **बड़ा दोष** कर दे,
उसे फल (दण्ड) **भोगने** के रूप में
पुनः सुधार व प्रगति का **अवसर**
सदा **मिलता** रहता है।
प्रभु की यह **सर्वोच्च कृपा** है।

पिछला दिन **कैसा भी** हो,
पर नया दिन **पूर्णतः** नया है।
पिछला दिन हमने
व्यर्थ कर दिया हो तो भी,
नया दिन पुनः **सार्थक** करने के
लिए मिल गया है।

नया दिन

एक नया जीवन है।

इस **नये जीवन को** और

अधिक **उचित रीति** से जीना है।

नये दिन को

नया जीवन **बनाना** है।

इस संसार में **एक** साधन की
अनुपस्थिति में, एक साधन के **अभाव** में,
एक साधन के न मिलने पर भी
अन्य साधन हमारे लिये उपस्थित रहते हैं,
भले ही वे अन्य साधन पहले इच्छित साधन के
समान **अच्छे** न हों,
उनकी उतनी **उपयोगिता** न हो,
किन्तु साधन तो वे फिर भी **हैं** ही।

अच्छे साधन न मिलें तो क्या
हमारे लिए प्रगति के अवसर ही समाप्त हो गये?
एक साधन-अवसर के न मिलने पर
दूसरे अन्य साधन व अवसर
हमें **प्राप्त** रहते ही हैं,
हमारे पास **अनेक विकल्प**
तब भी रहते ही हैं।

साधनों को ही
जब हम **साध्य** बना लेते हैं,
साध्य मानने लगते हैं,
तब लक्ष्य से **भटक** जाते हैं।
इच्छित साधनों के न होने पर
अपने को लक्ष्य से **चूक गया** हुआ
समझने लगते हैं।

साध्य सिद्ध न हो सकने पर भी
साधन को अपनाये रखना
योग्य नहीं होता,
साध्य की सिद्धि के लिये
दूसरे **विकल्प-साधन** का विचार व ग्रहण
आवश्यक होता है।

प्रभु की कृपा से
कोई न कोई **साधन** सदा
हमारे साथ रहता है,
कुछ करने का कोई न कोई **अवसर**
सदा हमारे **साथ** रहता है।

परिवार-समाज

कैसा भी हो,

हमें अपनी जीवन यात्रा

आगे **बढ़ानी** ही है,

अपने **लक्ष्य** को पाना ही है,

मुक्त होना ही है।

प्रभुकृपा से प्राप्त
इस सजे-सजाये सुन्दर संसार को
उपयोगिता की **उपेक्षा** कर के
और अधिक **सजाते** जाना, मेले सजाना
हमें **दूसरे मार्ग** पर ले जाकर,
उस मार्ग से **भटका** देता है,
जिस पर हमें **जाना** था।

आध्यात्मिक-मार्ग पर
चलकर ही
जीवन को
सार्थक किया
जा सकता है।

प्रभु के समान यदि हम भी
अधार्मिकों के प्रति **घृणा** का भाव न लाकर,
उनसे प्रभु के समान **उचित व्यवहार** करें,
उनके सुधार के लिए उन्हें यथायोग्य **दण्ड** दें,
पर मन में उनके **कल्याण** का भाव बना रहे,
तो परमपिता परमात्मा व परमकृपालु प्रभु की
परिपूर्ण कृपा के **पात्र**, हम बन पायेंगे।

प्रभु की कृपा हमारे साथ है,
हमने प्रभु की **बहुत कृपा** पाई है,
पर हमें प्रभु की **परिपूर्ण-संपूर्ण** कृपा चाहिए।
हमें प्रभु की असीमित कृपा में
अंतिम कृपा में डुबकी लगानी है,
हमें उसी में उतर जाना है,
हमारा जीवन तभी **धन्य** होगा।

शुभ कर्मों को **करते-करते** भी
सावधानीपूर्वक राग-द्वेष से **बच** के
चलते रहना होता है,
नहीं तो ये थोड़े-थोड़े **राग-द्वेष** आगे चल कर
इतने अच्छे जीवन को
पतित कर डालते हैं।

कब

किसके साथ

क्या हो जाये,

कुछ नहीं कहा

जा सकता।

प्रभुकृपा से हम सभी में
यह **सामर्थ्य** है कि
हम अपने भोगों व कर्मों की
मात्रा-स्वरूप-प्रयोजन को
इच्छानुसार पर्याप्त मात्रा में
बदल सकते हैं।

किसी व्यक्ति या
उसके वचन-ग्रंथ की **प्रामाणिकता**
तभी **स्वीकारी** जा सकती है,
जब वह उस विषय को **जानता** भी हो
व **राग-द्वेष-स्वार्थ से रहित** भी हो।

दोषों को **जानना**, न हटा पा सकने पर
दु:खी होना आदि आध्यात्मिक दृष्टि से
सहायक अच्छे **लक्षण** हैं,
किन्तु इतना **पर्याप्त** नहीं हो पाता है।
क्योंकि उस दोष से सम्बन्धित जन्म-जन्मांतर के
संस्कार बहुत प्रबल हैं और दोष की गहराई से
पूरी विवेचना नहीं हो पाई है।

दोष यदि

पूर्णतः **हानिकर** समझ में आ जायें,

उसमें कोई

लाभ-सुख न दिखे,

तो उसका

दूर हटना **सरल** हो जाता है।

जिस-जिस भी **दुर्गुण** से
हम अब तक हटे हैं,
उनसे तभी **हट** पाये हैं,
जब हमें उनकी **हानि** पूर्णतः समझ में आ गई।
इसी प्रकार आगे भी
अन्य दुर्गुण **हटाये** जा सकते हैं।

अध्यात्म में
प्रगति के लिये
किया गया
छोटा सा भी प्रयत्न
निष्फल नहीं होता।

आज के अधिकांश **स्त्री-पुरुष**
एक विवाह को भी
व्यवस्थित नहीं चला पाते,
दु:खी हो जाते हैं
तो फिर **अनेक विवाह** से तो
और **दु:खी** हो जायेंगे?

जब तक गिरने से **सीख** नहीं लेंगे,
गिरने से **समझ** नहीं बनायेंगे,
गिरने से **विवेक** प्राप्त नहीं करेंगे,
तब तक **गिरते** रहना है।

आध्यात्मिक प्रगति के लिए
अधिक भौतिक साधनों की
आवश्यकता
नहीं होती है।

आध्यात्मिक प्रगति में
न्यूनता का **मूल** कारण
इन भौतिक-अभौतिक साधनों का
पूरा उपयोग न करना होता है।

परिस्थितियाँ तो
कई अन्यों के साथ प्रायः **समान** हैं।
इसी प्रकार की **परिस्थिति** में रहते हुए,
इसी प्रकार की **कठिनाई-कष्ट** को उठाते हुए
कुछ आत्माएँ
उच्च आध्यात्मिक स्तर पर पहुँची हैं।

पूर्ण पुरुषार्थ के बाद ही
याचना-प्रार्थना
करणीय होती है।

बड़े बिगबॉस (परमात्मा) के घर में
सुख-शांति से रहने के
सबसे मुख्य व मूल **उपाय** हैं-
उसके **नियम-अनुशासन** का पालन,
अन्यों से **सहयोग व प्रेमपूर्वक व्यवहार।**

बड़े बिगबॉस (परमात्मा) को
कैमरे की आवश्यकता ही नहीं है।
उनकी आंखें, उनके कान **सर्वत्र** विद्यमान हैं।
बड़े बिगबॉस हमारे अन्तःकरण में,
मन में, बुद्धि में भी **विद्यमान** हैं
और हमारे प्रत्येक विचार को पूरी तरह **जान** रहे हैं।
इनसे बचकर, छुपकर कोई कुछ नहीं **कर** सकता,
विचार तक भी छुपकर **नहीं** कर सकता।

जिसे यह समझ में आ गया कि
बड़े बिगबॉस (परमात्मा) की दुनिया में
मैं कोई भी **गलत कार्य** करूंगा तो
दण्ड से **बच** नहीं सकूंगा,
और जो भी **अच्छा कार्य** करूंगा उसका
पुरस्कार मुझे अवश्य **मिलेगा,**
उस व्यक्ति का जीवन पूर्णतः **बदल** जाता है।
वह सदा नियम-अनुशासन-धर्म का ही **पालन** करता है।

बड़े बिगबॉस (परमात्मा) की

दृष्टि में अच्छा बनना

आवश्यक है,

भले ही अन्य सब की दृष्टि में

बुरे बन रहे हों।

सर्वज्ञ प्रभु के निर्णय
तो **असंदिग्ध** हैं,
त्रुटि की संभावना से **परे** हैं।
क्या **हमारे** निर्णय
वेद के निर्णयों से **मेल** खाते हैं?

प्रत्येक आत्मा को जो **परिणाम** चाहिए,
उसके लिए ही तो ऋषियों ने
व ईश्वर ने अपने **निर्णय** हमारे सामने रख दिये हैं।
मनमाना चलने में
इच्छानुसार परिणाम आना **संदिग्ध** है।
वेदों-ऋषियों के अनुसार चलने में इच्छानुसार
परिणाम आना **निश्चित** है।

साधन भी आवश्यक होते हैं
लक्ष्य प्राप्ति में।
साधनों के प्रति
अल्पप्रीति या **अप्रीति**,
उपेक्षाभाव साधक को
लक्ष्य-प्राप्ति से **दूर** कर देते हैं।

प्रभु ने इस संसार को साधन के रूप में

प्रिय-सुखद-रसयुक्त-अनुकूल बनाया है,

अतः साधन के रूप में यह संसार

उपादेय-ग्राह्य-स्वीकार्य है, होना चाहिये।

प्रभु ने इस संसार को साध्य के रूप में

अप्रिय-दुःखद-रसहीन-प्रतिकूल बनाया है,

अतः साध्य के रूप में यह

संसार **त्याज्य-अग्राह्य-अस्वीकार्य** है, होना चाहिए।

यह **सम्यक् दृष्टि** है।

संसार **साधन** के

रूप में तो **उपादेय** है, हेय नहीं है।

यह संसार **साध्य** के रूप में

उपादेय **नहीं** है,

त्याज्य है।

शरीर को स्वस्थ-बलवान् बनाने के लिए
बुद्धिपूर्वक-विचारपूर्वक
आहार सामग्री व क्रियाकलापों का
चयन या **त्याग** करना होता है।
मन में ईश्वर की **भावना-मात्र** से
शरीर **अध्यात्म के योग्य** नहीं
बना रह सकता।

इन्द्रियों को स्वस्थ-बलवान्-पवित्र
बनाये रखने के लिए भी
बहुत सोच-विचार कर बुद्धिपूर्वक
निर्णय लेने होते हैं कि
इन्द्रियों को **किस** विषय में लगाया जाए,
कब लगाया जाए व **कितना** लगाया जाए।

मन को
शान्त-प्रसन्न-पवित्र-श्रद्धा युक्त बनाने
या बनाये रखने के लिए
और अधिक **सोच-विचार**,
ज्ञान व **सावधानी** की
आवश्यकता होती है।

ज्ञान है तो बुद्धि का बहुत लाभ मिलता है,
विपरीत ज्ञान है तो इसी बुद्धि से
बहुत हानि उठानी पड़ती है।
बुद्धि में ज्ञान की प्राप्ति भी इसी बुद्धि के
समुचित उपयोग पर निर्भर करती है।
बुद्धि का **समुचित उपयोग** कैसे किया जाता है,
यह भी सीखना होता है, जानना होता है।
वैदिक-दर्शन हमें यह सिखाते हैं, जनाते हैं।

जीव

अपनी **वासनाओं** का

जैसा विस्तार करता है,

उसके अनुसार

ईश्वर उसे

अगला जन्म दे देता है।

परमात्मा
जो भी करता है,
वह वस्तुतः **न्याय** ही होता है,
अन्याय कभी नहीं होता है,
भले ही हमें वह
अन्याय **प्रतीत** हो रहा हो।

विचारों का राग **सबसे बड़ा राग** है,
विचारों की संलिप्तता
सबसे बड़ी संलिप्तता है।
किन्तु प्रभु की कृपा है,
हम अन्य धनादि के रागों,
संलिप्तताओं से जैसे हट सकते हैं,
वैसे ही इससे भी **हट** सकते हैं।

दर्शन योग महाविद्यालय की एक अभिनव परियोजना

सफलता विज्ञान

- पुस्तक शृंखला
- सुविचार पुस्तक शृंखला
- दैनिक सुविचार कलैंडर
- चित्र प्रदर्शनी
- शुभकामना संदेश
- ऑडियो-वीडियो प्रवचन
- मंच प्रस्तुति
- व्यावहारिक प्रशिक्षण
- सामाजिक मीडिया संदेश

भारत को विश्वगुरु बनाने वाली हमारी महान गौरवशाली संस्कृति की **सफलता प्रदायक विचारधारा** सर्वश्रेष्ठ है। मानवमात्र की भलाई के लिए इस विचारधारा को जन साधारण तक पहुँचाना अनिवार्य है। इसी दृष्टिकोण से दर्शन योग महाविद्यालय के द्वारा इस कल्याणकारी विचारधारा को **सरल-सुबोध भाषा** और **नवीनतम-आधुनिक मनोरंजक शैली** में प्रस्तुत करने के लिए अभिनव परियोजना '**सफलता विज्ञान**' का संचालन किया जा रहा है। इस आशा के साथ कि, ज्ञान को सहज-सुलभ बना कर, उसे घर-घर पहुँचाने वाली यह हमारी पारम्परिक पद्धति, आमजन के अन्दर जीवन का उद्धार करने वाले गुणों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी।

अतः महाविद्यालय के निदेशक और आचार्य की प्रेरणा, मार्गदर्शन व निर्देशन में महाविद्यालय के सेवा एवं साहित्य प्रचार विभाग द्वारा **पढ़ाई-नौकरी, व्यापार-साधना आदि जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में** सफल बनाने वाले वास्तविक-व्यावहारिक विधि-विधानों का पथ-प्रदर्शन करने वाली इस **वैचारिक परियोजना** का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस वृहत् परियोजना में अनेक विभाग हैं, यथा :-

1. **सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला (Series)** - जनसामान्य के बौद्धिक स्तर के दृष्टिगत रची गईं **'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला'** की **20 से अधिक** बहुरंगी आकर्षक पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है। जिसके तहत प्रथम पुस्तक **'सफलता का संसार'** प्रकाशित हो चुकी है, शेष पुस्तकें क्रमशः प्रकाशित होना बाकी हैं।

2. **सफलता विज्ञान सुविचार पुस्तक (Motivational Quotation Book) शृंखला**- निःसंदेह, हृदयंगम किए गए सुविचार ही, **कामना-कर्म-कामयाबी** के रूप में बदल कर स्वयं का **उद्धार** करा दिया करते हैं। इसी वास्तविकता के दृष्टिगत 'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की प्रथम पुस्तक 'सफलता का संसार' आधारित, प्रथम बहुरंगी सुविचार पुस्तिका 'सफलता सुविचार' प्रकाशित हो चुकी है। शृंखला की शेष सुविचार पुस्तिकाएं प्रकाशित होना बाकी हैं।

3. **सफलता विज्ञान चित्र प्रदर्शनी (Poster Exhibition) शृंखला** - पुस्तक शृंखला के प्रेरक तथ्यों को छोटे व बड़े लगभग 2000 की संख्या में **'पोस्टर'** के रूप में प्रकाशित करना प्रस्तावित है। फलतः सेवाभावी जन अपने घर व

ऑफिस में इन प्रेरक छोटे और स्कूल-कॉलेज-कोचिंग आदि संस्थाओं में बड़े पोस्टर्स की **प्रदर्शनी** स्वयं आयोजित कर सकेंगे। प्रदर्शनी के आयोजन के फलस्वरूप, लोग सफलता के मार्ग को जानकर, न केवल स्वयं सफलता की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे बल्कि अन्यों को भी बढ़ा सकने में सहयोगी बन सकेंगे। इसके अतिरिक्त, आमजन की सुविधा हेतु पोस्टर लागत व्यय पर उपलब्ध कराना भी प्रस्तावित है। वर्तमान में सफलता विज्ञान प्रदर्शनी शृंखला के पहले भाग के 55 पोस्टर्स का निर्माण हो चुका है।

4 **सफलता विज्ञान शुभकामना संदेश** (Greeting Card) **शृंखला** - मानवीय संबंधों को निभाने और उनसे लाभ पाने के लिए अपनों को यह अहसास कराते रहना जरूरी होता है कि, हाँ, कोई है, जो करता है... आपसे प्रेम, आपकी परवाह, और रखता है आपके मुख पर मुस्कान देखने की इच्छा। और मित्रो, यह अहसास कराया जा सकता है, शुभकामना-संदेशों के जरिए। अपनत्व की डोर में बंधे हृदय से सृजित हुआ शुभकामना संदेश यह दर्शा देता है कि, संदेश पाने वाला, संदेश देने वाले की नज़रों में कितना विशिष्ट है और संदेश देने वाले के मन में, पाने वाले के लिए कौन सी हार्दिक शुभकामनाएं सदा विद्यमान रहती हैं।

शुभकामना संदेशों के निर्माण के यही उद्देश्य हैं कि, ये संदेश औपचारिकता मात्र न होकर साज-सज्जा, प्रस्तुति व भाषा की दृष्टि से विशिष्ट हों, इनके जरिए न केवल सीधे तौर पर व्यक्ति का व्यक्ति से जुड़ाव और परस्पर प्रेम-मित्रता, अपनत्व-आत्मीयता, बंधुत्व-सहानुभूति आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति व प्रसार हो वरन् उन्हें प्रसन्नता, उत्साह व जीवन निर्माण की प्रेरणा और मार्गदर्शन भी साथ में प्राप्त हो। इस क्रम में '**सफलता-शुभकामना संदेश**', '**जन्मदिवस शुभकामना संदेश**', '**विवाह वर्षगांठ शुभकामना संदेश**' एवं '**नववर्ष शुभकामना संदेश**' की आकर्षक-मनमोहक प्रारंभिक रूपरेखा और नमूना तैयार किया जा चुका है, अब केवल प्रकाशन होना शेष है।

5 **सफलता विज्ञान दैनिक सुविचार कलैंडर** (Table Calendar) **शृंखला** – '**सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला**' की बहुरंगी आकर्षक पुस्तकों के आधार पर, वर्ष के **365** दिनों के लिए उपयोगी सुविचार युक्त वाक्यों को '**सफलता का संसार सुविचार**' शीर्षक से वार्षिक टेबल कलैंडर के रूप में प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। कलैंडर के हर पृष्ठ पर एक तिथी व एक

सुविचार अंकित होगा। भविष्य में शृंखलाबद्ध रूप से नए कलैंडरों के प्रकाशन की भी योजना है।

6 **सफलता विज्ञान ऑडियो-वीडियो प्रवचन शृंखला** – इसके पश्चात, योजना के **अगले चरण** के रूप में पुस्तकों के आधार पर ही तद् विषयक रुचिकर, सुनने व देखने योग्य '**ऑडियो–वीडियो प्रवचनों**' को तैयार करने की योजना है।

7 **सफलता विज्ञान मंच प्रस्तुति** (Stage Programme) **शृंखला** – आमजन में ज्ञान को प्रेषित करने के लिए विषय को और अधिक सरल, आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसी के दृष्टिगत उद्घोषक, गायक, वादक, लघु नाटिका, चलचित्र आदि साधनों के सामूहिक प्रयोग के माध्यम से सफलताप्रदायक विषय की प्रभावकारी, मनोरंजक **मंच प्रस्तुति धारावाहिक रूप से** देने की योजना है।

8 **सफलता विज्ञान व्यावहारिक प्रशिक्षण** (Practical Training) **शृंखला** – इसके अन्तर्गत विधिवत कक्षाओं के माध्यम से सफलताजन्य सिद्धांतों को जीवन–व्यवहार में उतारने का अभ्यास कराया जाना प्रस्तावित है।

'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की पुस्तकों और उन पर आधारित

सुविचार पुस्तिकाओं, सफलता विज्ञान चित्र प्रदर्शनियों (Exhibition), सफलता विज्ञान ऑडियो-वीडियो प्रवचनों, सफलता विज्ञान मंच प्रस्तुतियों (Stage Programme) के आधार पर और महाविद्यालय से मूलभूत अनिवार्य ज्ञान को प्राप्त कर, जिज्ञासु, पुरोहित, व्यायाम शिक्षक आदि सेवाभावी जन खुद, निजी स्तर पर अपने-अपने निवास स्थान से, दर्शन योग महाविद्यालय के बाह्य प्रशिक्षक के रूप में व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से इस विषय में देश में ही नहीं अपितु विदेश में **प्रशिक्षण कार्य** कर विद्वान प्रचारकों की कमी पूरी करने में सहयोग कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

9 **सफलता विज्ञान सामाजिक मीडिया संदेश सेवा** - इसके तहत, भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों को जागरूक करने और इसके आधार पर अपने जीवन का निर्माण करने में प्रवृत्त करने वाले विचार और जानकारी, भौगोलिक सीमाओं को लांघते हुए विश्व भर में बांटने, साझा करने और उनसे जुड़े रहने के लिए विभिन्न साइट्स आदि साधनों के माध्यम से, जैसे फेसबुक, लिंक्ड इन, ट्विटर, स्काइप, ई-मेल, व्हाट्स एप, सर्च इंजन साइट्स आदि का प्रयोग करते हुए सेवाएं प्रदान करना सम्मिलित है। इसमें इन्टरनेट के माध्यम से

ऑनलाइन प्रदर्शनी (online exhibition), अध्ययन गोष्ठी, (online seminar), कार्यशाला (online workshops), वीडियो सम्मेलन (online video conferences), सलाह (online consultancy), प्रशिक्षण (online training) आदि भी सम्मिलित हैं।

इस बहु-आयामी प्रकल्प के क्रियान्वयन में 1 करोड़ की राशि का अनुमानित प्रारंभिक व्यय होना है। विद्यालय की अपनी सामर्थ्य व अनुकूलता के अनुरूप ही इस योजना को लागू किया जाना संभव हो सकेगा। अतः मानव मात्र के कल्याण में रत सभी व्यक्तियों और संस्थाओं से, विनम्र अनुरोध है कि वे परस्पर आगे बढ़ने-बढ़ाने वाली इस कल्याणकारी वैचारिक परियोजना को सफल बनाने हेतु इसमें तन-मन-धन से सम्मिलित होकर सर्व कल्याण में सहयोगी बनकर, पुण्यार्जन का सुअवसर-सौभाग्य प्राप्त करें। इस परियोजना के लिए खोले गए खाते का विवरण इस प्रकार है:-

खाते का नाम:- सफलता विज्ञान (SAFALTA VIGYAN),

बैंक का नाम:- बैंक आफ बड़ोदा, बचत खाता क्र:- 01790100018163,

आइ एफ एस सी कोड:- BARB0DHANSU,MICR Code: 383012503

व्यावसायिक संस्थानों व कंपनियों से विशेष अनुरोध

कंपनी कानून में प्रावधान है कि कंपनियों को अपने लाभ का 2 प्रतिशत हिस्सा **निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व यानी कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिविलिटी (CSR)** पर खर्च करना होगा।

सफलता विज्ञान परियोजना सभी व्यावसायिक कौशलों को बढ़ाने के मूलभूत नियमों का परिज्ञान कराने वाली और समाज उत्थान के लिए प्रेरित करने वाली परियोजना होने से सी एस आर के दायरे में आती है। अतः इस परियोजना को लागू कर आप न केवल अपनी **सामाजिक वैधानिक जिम्मेदारी** का निर्वहन कर समाज का उपकार करेंगे बल्कि **भारतीय संस्कृति की रक्षा व विकास** कर पुण्यार्जन भी करेंगे। साथ ही, इस परियोजना के प्रभाव से आमजन के मध्य अपनी संस्था व उत्पाद के प्रति **विश्वास, सम्मान और साख** को भी बढ़ाकर अपने व्यापार की वृद्धि और प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने में समर्थ बनने में सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। अतः इसे सीएसआर के तहत लागू करने का अनुरोध है।

इसी से 'संगच्छध्वं' यानी सबके साथ मिलकर आगे बढ़ने के, ईश्वरीय आदेश का पालन होना भी सुनिश्चित हो सकेगा।

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट की गतिविधियां

1. दर्शनाचार्य निर्माण

वेद, मनुस्मृति, उपनिषद, योग, सांख्य, न्याय आदि दर्शनों और ऋषिकृत प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन, शंका-समाधान, संस्कृत भाषा शिक्षण, शारीरिक-शिक्षण। इनके माध्यम से इस वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु वैराग्यवान-योगाभ्यासी दर्शनाचार्यों-धर्माचार्यों का निर्माण करना, जो देश-विदेश में प्रचलित मिथ्या योग के स्थान पर सच्चे योग का प्रशिक्षण दे सकें। ट्रस्ट के द्वारा यह कार्य **दर्शन योग महाविद्यालय** के संचालन के माध्यम से पूरा किया जाता है।

2. ब्रह्मवेत्ता निर्माण

निष्काम भावना से युक्त मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर तन-मन-धन से सम्पूर्ण जीवन की आहुति देने वाले व्यक्तियों का निर्माण करना, जो अपनी और संसार की अविद्या-दु:ख-अधर्म का विनाश कर, उसके स्थान पर विद्या-आनन्द-धर्म की स्थापना कर मोक्ष को सिद्ध कर सकें। इसके लिए प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में विवेक, वैराग्य, ईश्वर-प्रणिधान, मनोनियन्त्रण,

ध्यान, समाधि तथा ममत्त्व (स्व-स्वामी संबंध) को हटाने का अभ्यास इत्यादि आध्यत्मिक सूक्ष्म विषयों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है। साथ ही, यम-नियम, मौन, आत्म निरीक्षण (Self Analysis), ध्यान आदि का सूक्ष्मता से आचरण कराया जाता है।

3. सघन साधना शिविर

साधना में विशेष गति-उपलब्धि प्राप्त करने और आध्यात्मिक विद्या की रक्षा व वृद्धि करने के उद्देश्य से साधना में विशेष रुचि रखने वाले योगाभ्यासियों के लिए एक वर्ष के विशेष साधना शिविर का आयोजन। इस प्रकार, महाविद्यालय वैदिक दर्शन अध्यापन और ध्यान योग प्रशिक्षण के आदर्श संस्थान के रूप में कार्यरत है।

4. प्रशिक्षण -

विद्यालय या बाह्य स्थानों में निम्नानुसार प्रशिक्षण :-

(1) सरल आध्यात्मिक शिविर

(2) वैदिक ध्यान व क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

(3) आर्य महिला प्रशिक्षण शिविर

(4) व्यक्तित्त्व विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर

(5) किशोर चरित्र निर्माण शिविर

(6) क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

(7) पारिवारिक सत्संग।

उपरोक्त अवैतनिक सेवाओं के अन्तर्गत वैदिक योग व वेद-दर्शन-उपनिषद आदि वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन-अभ्यास व इनसे संबंधित प्रवचन माला तथा आगंतुक महानुभावों का मार्गदर्शन व जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करना आदि आध्यात्मिक लाभ प्रदान किया जाता है।

5. **साहित्य प्रकाशन** -

मानव मात्र के कल्याण के लिए उपयोगी साहित्य (पुस्तक, पत्रक, सीडी, कलेन्डर आदि) का लेखन-प्रकाशन-वितरण निःशुल्क या लागत व्यय पर होता है।

6. वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार में समर्पित विद्वानों और अन्य गुरुकुलों में अध्ययनरत **विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग**।

7. संन्यास, वानप्रस्थ, उपनयन, वेदारम्भ दीक्षा आदि **वैदिक संस्कारों** का आयोजन। वैदिक **अंत्येष्टि संस्कार** करना तथा उसमें प्रयुक्त सामग्री का सहयोग।

8. **गौ वंश संवर्धन** हेतु प्रचार तथा धनादि का सहयोग। निर्धन **विकलांग रोगियों को आर्थिक सहायता**। देश के विभिन्न प्रान्तों में **प्राकृतिक प्रकोपों में सहायता** प्रदान करना।

9. महाविद्यालय में **यज्ञ शाला** का संचालन और देश के विभिन्न प्रान्तों में यज्ञ **प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन। पर्यावरण शुद्धि के निमित्त वैज्ञानिक स्तर पर यज्ञ-हवन का क्रियान्वयन, प्रशिक्षण। औषधि व वनस्पति **वृक्षारोपण** करना व **अन्यों** को प्रेरित करना।

10. **इन्टरनेट व वेबसाइट** आदि के माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रेरणा तथा आध्यात्मिक व व्यावहारिक शंकाओं का समाधान किया जाता है।